आरती श्री बालकृष्ण जी की

आरती बालकृष्ण की कीजै ।
अपनो जनम सुफल करि लीजै ।।

श्रीयशुदा को परम दुलारौ ।
बाबा की अंखियन को तारौ ।।

गोपिन के प्राणन को प्यारौ ।
इन पैं प्राण निछावरि कीजै ।।

आरती बालकृष्ण की कीजै ।
बलदाऊ को छोटो भैया ।।

कनुआं कहि कहि बोलत मैया ।
परम मुदित मन लेत बलैया ।।

यह छवि नयननि में भरि लीजै ।
आरती बालकृष्ण की कीजै ।।

श्री राधावर सुघर कन्हैया ।
ब्रजजन कौ नवनीत खवैया ।।

देखत ही मन नयन चुरैया ।
अपनौ सरबस इनकूं दीजै ।।

आरती बालकृष्ण की कीजै ।
तोतरि बोलनि मधुर सुहावै ।।

सखन मधुर खेलत सुख पावै ।
सोइ सुकृती जो इनकूं ध्यावै ।।

अब इनकूं अपनो करि लीजै ।
आरती बालकृष्ण की कीजै ।।

विवरण

बालकृष्ण की आरती है । इनकी आरती करने से अपना जीवन सुफल हो जाता है। ये श्रीकृष्ण मइया यशोदा के परम दुलारें हैं तथा नन्द बाबा के आँखों के तारे हैं । गोपियों के ये अपने प्राणों से भी प्यारे हैं तथा इनपे वो अपने प्राण न्योछावर करने केलिए तैयार रहती हैं । ऐसे बालकृष्ण की आरती है ।

ये बलराम जी के छोटे भाई हैं, इन्हे यशोदा मइया कनुआं कह-कह करके बुलाती हैं तथा बड़े ही प्रेम से आनन्दित मन से बलैया लेती हैं, ये छवि हम
अपनी आँखों मे भरकर बालकृष्ण की आरती करते है । ये सुन्दर-सुघड़ कन्हैया राधा के पति हैं, ब्रज के बालकों को ये मक्खन खिलाने वाले हैं, देखते ही ये मन को चुरा लेते हैं (इसलिए इनका नाम चित्तचोर भी है), ऐसे बालकृष्ण की आरती है ।

इनका तोतली भाषा में बोलना अत्यन्त मधुर लगता है, सखाओं के संग इनका मधुर खेल बहुत ही सुखदायी लगता है । इनकी सुन्दर कृति को जो भी ध्यान करता है, उसे ये अपना बना लेते हैं, ऐसे बालकृष्ण की आरती है ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.